TYPES OF MORPHEMES

HINDI MATERIAL PREPARED FOR NMRC, JNU AND EKLAVYA, BHOPAL BILINGUAL PROJECT

BY INDRANI ROY

MARCH 2012

मॉर्फीम के प्रकार

कातम्बा - अध्याय 3/ फ्रॉमकिन अध्याय 3

Note:

This text is based on Katamba Chapter 3 and Fromkin Chapter 3. The part on Word Formation Processes is from Fromkin. The parts on Compounds and Reduplication is from Agnihotri Chapters 15 and 16. Additional materials are from Yule, Aitchison and Hockett.

पिछले अध्याय में हमने देखा था कि शब्दों की एक अन्दरूनी संरचना होती है. शब्द मॉर्फीम से बनते है. मॉर्फीम शब्द का सबसे छोटा इकाई है जिसका कुछ अर्थ होता है. इस अध्याय में हम मॉर्फीम के प्रकारों के बारे में जानेंगे और देखेंगे कि किस प्रकार से इन इकाइयों से शब्द बनते हैं.

इस अध्याय के ख़ास विषय हैं - *स्वतंत्र और बंधे मॉर्फीम*. स्वतंत्र मॉर्फीम में हम *कॉन्टेन्ट और फंक्शन शब्द* देखेंगे. बंधे मॉर्फीम में हम *ऍफिक्स* और उसके प्रकारों को देखेंगे (इस विभाग के रेखाचित्र के लिये आप फ्रॉमकिन के तीसरे अध्याय मे figure 3.2 देखें) . इसके अलावा हम देखेंगे कि भाषाओं में नये शब्द बनने के क्या-क्या प्रक्रियायें हैं.

स्वतंत्र और बंधे मॉर्फीम

जैसा कि इनके नाम से पता चलता है *स्वतंत्र मॉर्फीम* यानी वो मॉर्फीम जो अपने आप में शब्द हो. इन्हें पूरा करने के लिये कुछ और मॉर्फीम को लगाना नहीं पड़ता. इनके उदाहरण हैं --

प्याला, रोना, खुशी, आज़ाद, पीला, लगातार, में, पर, आप, हम, कोई इत्यादि

आप देख सकते हैं कि ये पूरे पूरे शब्द हैं किसी वाक्य में आप इनको इसी रूप में उपयोग कर सकते है.

बंधे मॉर्फीम को किसी और मॉर्फीम के साथ जुड़ना पड़ता है, ये अपने-आप में शब्द नहीं हैं. उदाहरण के लिये -

अनपढ़ में *अन*, *सुरीला* में *ईला*, *अपनापन* में *पन*

आप कोई वाक्य इस तरह का नहीं बना सकते - *वो अन है या उसमें पन है. अन* या *पन* को हमेशा किसी और मॉर्फीम के साथ जुड़ना पड़ेगा. इस तरह के मॉर्फीम बंधे मॉर्फीम है.

स्वतंत्र मॉर्फीम के दो भाग है -

<u>कॉन्टेन्ट शब्द और फंक्शन शब्द</u>

कोई भी एक शब्द सोचिये. अब ये देखिये कि जो शब्द आपने सोचा क्या वो - संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण है? ज़्यादातर लोग इन्हीं में से कोई एक शब्द सोचेंगे. बहुत कम लोग होंगे जिन्होनें - *ये, वो, और, जो* इस तरह के शब्द सोचे होंगे. वैसे है तो ये भी शब्द है पर हम कह सकते हैं कि ये वाक्य में कम उभर कर आते हैं इसका कारण ये है कि - संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण के अन्तर्गत आने वाले शब्द वाक्य के अर्थ का भार संभालते हैं. इन्हें हम *कॉन्टेन्ट शब्द* कहते हैं. जैसे *प्याला, रोना, खुशी, आज़ाद, पीला, लगातार* कॉन्टेन्ट शब्द हैं.

जो शब्द वाक्य में कॉन्टेन्ट शब्दों के व्याकरणिक संबंधों को दर्शाते हैं जैसे कि सर्वनाम, योजक, उन्हें हम फंक्शन शब्द कहते हैं. कॉन्टेन्ट शब्द और फंक्शन शब्द के विभाग के पीछे कई मनोवैज्ञानिक प्रमाण भी हैं. बच्चों के भाषा-अर्जन करने के प्राथमिक चरणों में ये देखा गया है कि वे ज़्यादातर फंक्शन शब्दों को छोड़कर वाक्य रचना करते है. *ये, वो, और, जो में, पर, आप, हम, कोई* फंक्शन शब्द है.

कॉन्टेन्ट शब्दों को *ओपन क्लास* और फंक्शन शब्दों को *क्लोज़ क्लास* भी कहते है. जैसा कि इनके नाम से पता चलता है ओपन क्लास यानी खुला क्लास. इनमें नये शब्द हर वक्त जुड़ते रहते है. क्लोज़ क्लास यानी बन्द क्लास इनमें नये शब्द नहीं जुड़ते और अगर जुड़ते भी है तो शताब्दियां लग जाती हैं.

आप अपने आस-पास देखिये हिंदी में जो नये शब्द जुड़े हैं या ओपन क्लास या कॉन्टेन्ट शब्द हैं - *चैनेल, ब्लॉग, इन्टरनेट, बिंदास,* चकदे इत्यादि ये सब संज्ञा या विशेषण या क्रिया है. हिन्दी से अंग्रज़ी में लिये गये शब्द - *अवतार, मसाला, गुरू* संज्ञा है.

हिन्दी में जिस प्रकार हम कभी-कभी बोलते हैं *परवा नही.* वैसे दूसरी भाषाओं में भी बोला जाता है. बांग्ला में *परवा नेई*, तेलुगु में *परवा लेदु*, तमिल और कन्नडा में *परवा इल्ला.* आप देख सकते हैं कि *परवा* शब्द जो असल में फारसी से आया है अलग-अलग भाषाओं ने ले लिया है पर *नहीं* शब्द सब अपनी-अपनी भाषा में से ही ले रहे हैं. अब आप ही बता सकते हैं कि इनमें से कौनसा शब्द ओपन क्लास का है और कौन सा क्लोज़ क्लास.

<u>ऍफिक्स</u>

फिक्स शब्द का एक मतलब है जोड़ना. *ऍफिक्स* वो मॉर्फीम है जो जुड़ते हैं तो ज़ाहिर है कि ऍफिक्स बंधे या बाउन्ड मॉर्फीम के श्रेणी में आते हैं. ऍफिक्स, शब्द के अलग अलग हिस्सों में जुड़ते हैं. आगे जुड़ने वाले ऍफिक्स को *प्रीफिक्स* और पीछे जुड़ने वाले को *सफिक्स* कहा जाता है, हिन्दी या संस्कृत व्याकरण में हम इन्हें *उपसर्ग* और *प्रत्यय* कहते है. उपसर्ग या प्रीफिक्स के उदाहरण है ***अन**-मोल, **सु**-हास, **अ**-घोर, **प्रति**-दिन, **निः**-स्वार्थ, **ना**-मर्द, **बे**-शर्म, **बद**-मिज़ाज, **ग़ैर**-हाज़िर.* प्रत्यय या सफिक्स के उदाहरण है *चमका-**ना**, करवा-**इये**, स्बध-**ता***, *किताबें* में ***एं***, *शब्दों* में ***ओं***

इन दो तरह के ऍफिक्स के अलावा *इनफिक्स* और *सर्कमफिक्स* भी होते हैं. *इन* यानी अन्दर तो इनफिक्स वे ऍफिक्स हैं जो शब्दों के अन्दर जुड़ते हैं. उदाहरण के लिये तस्वीर शब्द जो की अरबी से है उसका बहुवचन बनाने के लिये हिन्दी में तो शब्द के बाद *एं* लगाया जाता है पर अरबी में (और कई दफा हिन्दी-उर्दु में भी) इस शब्द के अन्दर आ लगाकर बहुवचन बनाया जाता है जैसे -- *तसावीर. त-स-**आ**-वी-*र. इधर **आ** इनफिक्स है. इसी तरह *क़तल* शब्द से बने *क़ातिल* में *आ* और *इ* इनफिक्स हैं क़-*आ*-त-इ-ल.

सर्कम का अर्थ है घेरा बनाना. वे ऍफिक्स जो शब्दों को दोनों तरफ से घेरते हैं वे *सर्कमफिक्स* कहलाते हैं. हिन्दी में इनके उदाहरण नहीं मिलते हैं. अब आप ये सोच सकते हैं कि *अनावश्यकता* शब्द में तो ऍफिक्स *आवश्यक* शब्द के दोनों तरफ है ***अन**-अनावश्यक-**ता**.* पर फर्क ये है कि इधर दो अलग ऍफिक्स यानी प्रीफिक्स और सफिक्स है और दोनों शब्द में अलग-अलग अर्थ जोड़ते हैं पर सर्कमफिक्स में ये खास बात है कि यद्यपि ये शब्द के दोनों तरफ लगते हैं ये अर्थ एक ही बनाते हैं. इनके उदाहरण उत्तरी अमरीका के ओकलाहोमा में बोले जाने वाले *चिकासॉ* भाषा में मिलते हैं --

चोकमा - वो अच्छा है

इक**-चोकम-**ओ - वो अच्छा नहीं है

पल्ली - गरम है
इक-*पल्ली*-***ओ*** - गरम नहीं है

पल्ली और *चोकमा* शब्दों के आगे और पीछे *इक* और *ओ* एक साथ जुड़े है और इससे ये शब्द नकारात्मक बन गये हैं.

<u>रूट, स्टेम, बेस</u>

ये नाम अंग्रेज़ी में पेड़ों के हिस्सों का है, *रूट* यानी जड़, वो हिस्सा जिसका होना ज़रूरी है. *रूट* पर कुछ और जुड़ा तो *स्टेम* बना यानी की तना. सब मिलाकर पेड़ बना. इसी तरह शब्द बनते हैं . रूट वे शब्द है जिनमें ऍफिक्स नहीं लगे हैं, जब रूट में ऍफिक्स लगते हैं तो उन्हें स्टेम कहते हैं.

समान - रूट
असमान (*अ+समान)* - प्रिफिक्स और रूट = स्टेम
असमानता (अ+समान+ता) - प्रिफिक्स और रूट और सफिक्स = स्टेम
असमानताऐ (*अ+समान+ता+ऐ)*- प्रिफिक्स और रूट और सफिक्स = शब्द

ऐसे रूट या स्टेम जिसपर ऍफिक्स लगाये गये हो उन्हें *बेस* भी कहा जाता है.

<u>इनफ्लेक्शनल और डेरिवेशनल मॉर्फीम</u>

ऍफिक्स को हमने शब्द के आगे, पीछे या बीच में जुड़ने के हिसाब से अलग-अलग किये. इसके अलावा ऍफिक्स शब्दों में क्या बदलाव ला रहे हैं इस आधार पर हम दो प्रकारों में फर्क कर सकते हैं

अगर किसी मॉर्फीम से किसी शब्द के व्याकरणिक श्रेणी में परिवर्तन होता है तो उसे डेरिवेशनल मॉर्फीम कहते हैं उदाहरण के लिये किसी मॉर्फीम के जुड़ने पर संज्ञा शब्द विशेषण में परिवर्तित होता है. इनफ्लेक्शनल मॉर्फीम में शब्द के श्रेणी नहीं बदलते, ऐसे मॉर्फीम के जुड़ने से शब्दों के एकवचन से बहुवचन या स्त्रीलिंग से पुल्लिंग बनते है. उदाहरण के लिये इन वाक्यों को देखिये -

छात्रों के **जवाबों** से अध्यापक खुश हुये
सर्कस देखकर मैं **लाजवाब** हो गई

उनके लड़के की शादी में बहुत **खर्चे** हुये
वे बहुत **खर्चीले** इंसान हैं

जवाब शब्द में *ओं* लगकर *जवाबों* बना है. *ओं* मॉर्फीम से एकवचन शब्द बहुवचन में बदला है पर शब्द संज्ञा ही है. इसलिये *ओं* इनफ्लेक्शनल मॉर्फीम है. जबकी *ला* से *जवाब* शब्द विशेषण बन गया है . क्योंकि *ला* , *जवाब* शब्द के व्याकरणिक श्रेणी में परिवर्तन लाता है ये डेरिवेशनल मॉर्फीम है. इसी तरह *खर्च* से *खर्चे* में *ए* इनफ्लेकशनल मॉर्फीम है और क्योंकी *इले* लगकर यह *खर्च* शब्द विशेषण बन गया है *ले* डेरिवेशनल मॉर्फीम है.

इसी तरह *नहाता* से *नहाती* में *ई*, या फिर *करो* से *करोगे* में *गे* इनफ्लेक्शनल मॉर्फीम है क्योंकि *ई* मॉर्फीम से पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाया जाता है ओर *गे* मॉर्फीम से वर्तमान काल बदल कर भविष्यकाल बन जाता है.

<u>भाषा में नये शब्द बनने की प्रक्रियायें</u>
अब तक हमने भाषा में उपस्थित शब्दों का विश्लेषण किया. इस विश्लेषण का मकसद था कि हम ये जाने कि शब्दों की संरचना नियमों के अनुसार होते हैं. इस भाग में हम भाषा में नये शब्द बनने कि कुछ प्रक्रियाओं के बारे में जानेंगे.

<u>कॉयनेज</u>
ऐसे कई शब्द हैं जो नये उत्पादों के नाम से आये हैं जैसे कि *नायलॉन.* इस कपड़े के आविष्कारकों ने *कॉटन* और *रेयॉन* से *ऑन* लेकर *नाय* से जोड़ दिया, *नाय* का कोई मतलब नहीं है. ये बिल्कुल ही नया शब्द बनाया गया था एक नये उत्पाद के लिये.

ज़ेरॉक्स शब्द से हम सभी परिचित हैं पर असल में ये उस कम्पनी का नाम है जिसने ये मशीन का सबसे पहले आविष्कार किया. असली प्रक्रिया फोटोकॉपी कहलाती है. पर आम बोलचाल में हम सभी कहते है - ये किताब *ज़ेरॉक्स* कर लो.

इस तरह के बिल्कुल नये शब्द बनने कि प्रक्रिया को *कॉयनेज* कहा जाता है.

<u>एपोनिम</u>

कुछ ऐसे शब्द हैं जो नाम से बनते है. इनमें से एक है *सैन्डविच*. यह इंग्लैंड का एक जगह है. यहां के एक सामंत (earl) को जुआ खेलने का इतना नशा था कि उन्हें खाने की फुरसत नहीं होती थी. वे ब्रेड और मांस इत्यादि अलग से न खाकर दो ब्रेड के टुकड़ों के बीच में मांस इत्यादि रखकर खाते थे. इस तरह खाने की एक नई चीज़ बनी और जिस जगह से इसकी उत्पत्ति हुई क्योंकि उस जगह का नाम *सैन्डविच* था इस खाने का नाम *सैन्डविच* पड़ा

अंग्रज़ी में घुड़सवारी करने के लिये बने खास पैन्ट को *जोधपुर* कहते है. ये नाम जोधपुर शहर से पड़ा है. जोधपुर के राजकुमार जो की बहुत उमदा पोलो खिलाड़ी थे इंग्लैंड में 1897 में अपनी टीम के साथ के पोलो खेलने गये थे. उनके खास पहनावे से ये पोशाक प्रेरित है.

इस तरह नाम से शब्द बनने कि प्रक्रिया को *एपोनिम* कहा जाता है.

<u>क्लिपिंग</u>

कई आम शब्द लंबे शब्द कटकर बनते है इसलिये इस प्रक्रिया को क्लिपिंग कहा जाता है, *क्लिप* करने का एक मतलब है छोटा करना. *मैथेमेटिक्स* से *मैथ्स*, *एग्ज़ामिनेशन* से *एग्ज़ाम*, *गैसोलीन* से *गैस*, *फैनॅटिक* से *फैन*, *जिम्नेज़ियम* से *जिम*, *लैबोरेटरी* से *लैब* ये सभी शब्द क्लिपिंग के उदाहरण हैं.

<u>बैक फॉरमेशन</u>

बेबिसिटर ये शब्द क्रियारूप में भाषा में पहले आया, इसमें *इर* सफिक्स हटाकर *बेबिसिट* संज्ञा शब्द बना है. इसी तरह *टेलिविज़न* से *टेलिवाइज़* शब्द बना है. इसी तरह जब भाषा में शब्द के एक रूप से दूसरे रूप बनते हैं इन्हें *बैक फॉरमेशन* कहते हैं.

<u>ब्लेन्ड</u>

जब दो शब्दों के टुकड़ों को मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है इसे *ब्लेन्ड* कहते हैं. आजकल मिडिया में प्रचलित शब्द हैं *इन्फोटेनमेन्ट* और *एडुटेनमेन्ट*. ये शब्द *इनफॉरमेशन* और *एन्टरटेनमेन्ट* एवं *एजुकेशन* और *एन्टरटेनमेन्ट* से बने हैं. इसी तरह *टेलिकास्ट* शब्द *टेलिविज़न* और *ब्रॉडकास्ट* से बना है.

<u>ऍक्रोनिम</u>

एड्स, सार्स, रैम, एमपेग, जेपेग ये सारे शब्द कई शब्दों के पहले अक्षरों से बने है.

AIDS - Acquired Immune Deficiency Syndrome
SARS - Severe Acute Respiratory Syndrome
MPEG - Moving Picture Experts Group
JPEG - Joint Photographic Experts Group
ATM - Automatic Teller Machine
PIN - Postal Index Number
- Personal Identification Number

इस तरह के शब्दों को *ऍक्रोनिम* कहते हैं.

कॉम्पाउन्ड

दो या दो से अधिक सम्पूर्ण शब्द मिलकर जब शब्द बनते हैं तो उन्हें कॉम्पाउन्ड शब्द कहते है. कॉम्पाउन्ड शब्दों की ख़ासियत ये है कि दो अलग-अलग शब्दों से मिलकर बनने पर भी इनका एक ही अर्थ निकलता है. अंग्रेज़ी में कॉम्पाउन्ड के कई उदाहरण मिलते हैं जो अब हिन्दी में भी इस्तेमाल किये जाते है - ब्लैकबोर्ड, बॉलपॉइन्ट, होमॅवर्क, व्हाइटवॉश इत्यादि.

पारम्परिक रूप से हिन्दी व्याकरण में कॉम्पाउन्ड शब्दों को चार भागों में बांटा जाता है. ये हैं - *बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, तत्पुरूष, द्वन्द्व*. ये वर्गीकरण अर्थ के आधार पर किया जाता है.

बहुव्रीहि शब्दों के अर्थ उनके पदों के अर्थों के बाहर होते हैं. जैसे --

नीलकण्ठ का अर्थ है 'नीला हो कण्ठ जिसका' यानी *शिव*
लम्बोदर का अर्थ है 'लम्बा हो उदर जिसका' यानी *गणेश*

अव्ययीभाव शब्दों में पहला पद मुख्य होता है इन शब्दों के पहले भाग से इनका अर्थ निर्धारित होता है जैसे ***प्रति****माह*, ***सम****कालीन*
प्रति और *सम* अव्यय है ये सब लिंगो, विभक्तियों और वचनों में समान रूप से प्रयोग होते हैं. इसके अलावा ये हमेशा किसी और शब्द के साथ ही प्रयोग होते हैं अलग से नहीं.

तत्पुरूष शब्दों में दूसरा भाग मुख्य होता है. *राम* ***कहानी*** और *समाचार* ***पत्र*** में *कहानी* और *पत्र* मुख्य पद हैं

इन्हीं से इन दो शब्दों के अर्थ का निर्धारण होता है.

द्वन्द्व समास में दोनों पद समान होते हैं ये एक दूसरे पर निर्भर नहीं होते जैसे माता-पिता, राम-सीता. इनका अर्थ माता और पिता एवं राम और सीता है.

कुछ ऐसे शब्द हैं जो लगते तो कॉम्पाउन्ड कि तरह पर है नहीं जैसे - *घुड़सवार, हथकड़ी. चौराहा.* इन शब्दों में घुड़,*हथ* या *चौ* अलग शब्द नहीं हैं और इसलिये हम इन्हें कॉम्पाउन्ड नहीं मानेंगे.

<u>रिडुप्लिकेशन</u>

हिन्दी में इस प्रक्रिया से बहुत शब्द बनते हैं. इस प्रक्रिया मे या तो पूरा शब्द, या शब्द का कोई भाग दोहराया जाता है. जैसे घर-घर, करते-करते. हम घर-घर या करते-करते शब्दों को घर अथवा करते से अलग क्यों मानेंगे ये समझने के लिये आप इन वाक्यों को देखिये --

उसने *घर* जाकर सबको बताया
उसने *घर-घर* जाकर सबको बताया

वे एक साथ काम *करते* हैं
एक साथ काम *करते-करते* उनकी दोस्ती हुई

आप ये देखेंगे कि रिडुप्लीकेटेड शब्दों का अर्थ, अकेले शब्दों से अलग हैं. घर-घर यानी 'कई घर' और करते-करते यानी 'करते हुये'.

रिडुप्लिकेशन का जो दूसरा प्रकार है उसमें शब्द को आधा ही दोहराया जाता है जैसे --

उन्होनें हमें *खाना* खिलाया
उन्होनें हमें *खाना-वाना* खिलाया

बाज़ार से *आलू* ले आओ
बाज़ार से *आलू-वालू* ले आओ

जब हम कहते है कि किसीने हमें खाना-वाना खिलाया है तो इसका मतलब उन्होनें हमें खाने के साथ-साथ और भी कुछ खिलाया. जब हमें आलू-वालू लाने को कहा जाता है तो इसका मतलब वे हमें आलू के साथ-साथ प्याज़, टमाटर भी लाने को कह रहे हैं

एक और प्रकार का रिडुप्लिकेशन इन शब्दों में हम देखते हैं जहां समान अर्थ के दो अलग शब्द एक साथ मिलकर एक शब्द बनाते हैं

धर्म-ईमान
धन-दौलत
शादी-ब्याह

ये एक संस्कृत और एक फारसी शब्द मिलकर बने हुये है, पर बोलचाल में हम इन्हें एक शब्द के अर्थ में ही इस्तेमाल करते हैं.

<u>सारांश</u>

जो मॉर्फीम अपने-आप में संपूर्ण शब्द होते है उन्हें *स्वतंत्र मॉर्फीम* कहते हैं. इसके विपरीत *बंधे मॉर्फीम* को किसी और मॉर्फीम के साथ जुड़ना पड़ता है. स्वतंत्र मॉर्फीम में *ओपन क्लास (कॉन्टेन्ट शब्द)* और *क्लोज़ क्लास (फंक्शन शब्द)* होते है. *ओपन क्लास (कॉन्टेन्ट शब्द)* वे होते है जिसमें नये शब्द आसानी से लिये जाते है जैसे संज्ञा या क्रिया. *क्लोज़ क्लास (फंक्शन शब्द)* जैसे सर्वनाम में नये शब्द नहीं आते या कम आते है. *ऍफिक्स* बंधे मॉर्फीम हैं - शब्द के पहले लगने वाले *ऍफिक्स* को प्रीफिक्स, शब्द के बाद में लगने वाले को *सफिक्स*, बीच में लगने वाले को *इनफिक्स* और दोनों तरफ लगने वाले को *सर्कमफिक्स* कहा जाता है *इनफ्लेक्शनल ऍफिक्स* लिंग, वचन, काल में परिवर्तन करते है.और *डेरीवेशनल ऍफिक्स* संज्ञा से विशेषण इत्यादि बनाते हैं. *रूट* में *ऍफिक्स* जुड़कर *स्टेम* बनते हैं.

शब्द बनने के कई प्रक्रियायें हैं - बिल्कुल नये शब्दों के निर्माण को *कॉयनेज* कहा जाता है. जो शब्द नामों से बनते हैं उन्हें *एपोनिम* कहते है, *ब्लेन्ड* दो शब्द के भागों को जोड़ने से बनते है, बड़े शब्द से छोटे शब्द बनने की प्रक्रिया हो *क्लिपिंग* कहते हैं, एक श्रेणी के शब्द (जैसे क्रिया) से दूसरे श्रणी के शब्द (जैसे संज्ञा) बनने की प्रक्रिया को *बैक फॉरमेशन* कहते हैं. कई शब्दों के पहले अक्षरों से बने हुये शब्दों को *ऍक्रोनिम* कहते हैं. *कॉम्पाउन्ड* दो संपूर्ण शब्दों के जुड़ने से बनते हैं. एक शब्द को दोहरा कर नये शब्द बनाने की प्रक्रिया को *रिडुप्लिकेशन* कहते हैं.

अभ्यास के लिये

(1) इन शब्दों में से स्वतंत्र और बंधे मॉर्फीम अलग कीजिये.

धीरे, विशालकाय, पढ़ाना, सच्चाई, आतिशबाजी, हलवाई, कंधा, लगातार, देख, बुरा.

(2) मान लीजिये आपको टेलिग्राम भेजना हैं. बिना कोई सूचना निकालते हुये कम से कम शब्दों में ये संदेश लिखिये --

हमारी परिक्षा रद्द कर दी गई है इसलिये मैं कल घर आ रही हूँ. कल शाम को सात बजे मुझे लेने स्टेशन पर आ जाइयेगा.

अपने टेलिग्राम को देखकर ये बताइये कि इसे लिखते वक्त कौनसे शब्द निकाले, इनमें से कितने कॉन्टेन्ट शब्द है और कितने फंक्शन शब्द?

(3) इन शब्दों में से इनफ्लेक्शनल और डेरिवेशनल मॉर्फीम अलग कीजिये

घबराहट, घरों, बनाया, बेदर्द, बनावट, दयालु, गवैया, चिट्ठियां, करना, घिसाई

(4)

मैं खाती हूँ, मैने खाया, मैं खाऊँगी

ये खा क्रिया के कुछ रूप है.

(a)इसी तरह हम, तुम, आप, आप सब, वे, वे सब, राम, सीता, के लिये क्रियारूप देकर सूची बनाइए.

(b)अब इन अलग-अलग क्रियारूप में कौन-कौन से मॉर्फीम लगे हैं उनकी सूची बनाइए.

(c)ये मार्फीम क्रिया से जुड़कर उसमें क्या परिवर्तन ला रहे है बताइए.

(d)क्या ये मार्फीम इनफ्लेकशनल हैं या डेरिवेशनल?

(5) इन शब्दों में रूट, प्रीफिक्स, और सफिक्स अलग कीजिये --

बेचैनी, निरादर, आश्चर्यजनक, अप्रत्याशित, नाकेबंदी, नाइन्साफी, बाज़ारीकरण, प्रस्तावित, दूरदर्शिता

(6) भाषाओं में शब्दों का लेन-देन होता रहता है. हिन्दी में इस्तेमाल होने वाले कुछ आम शब्द विदेशी भाषाओं से आये हैं. शब्दकोश इत्यादि के सहायता से बताइये कि नीचे दिये गये शब्द कौन-कौन सी भाषाओं से हिन्दी में आये है -

साबुन, रिक्शा, चाय, किला, कैंची, बालती, सुनामी, तबला, नाबालिक, नौकर, पावरोटी, लाल, मेज़, लीची.

(7) नीचे दिये हुये वाक्य में जो शब्द रेखांकित किये गये हैं, वे शब्द-संरचना के कौन सी प्रक्रिया से बने हैं?

उन्होनें *पोटा* का विरोध किया
वे कम *चीनी* लेते हैं
रेल मंत्री ने किराया बढ़ाया
आजकल *फ़ोन* में *ब्लूटूथ* होता है
आप *मन्द-मन्द* मुसकुरा क्यों रहे हैं
मोडेम खराब होने से मैं अपना मेल नहीं देख पाई
मां ने *डबलरोटी* मंगवाई
क्या आपने कभी *लौहपथगामिनी अग्निरथ* से सफर किया है?
सौ *वॉट* के बल्ब से काफी रोशनी होती है
डिस्को में नाचना-गाना चल रहा है
उन्होनें हमें रविवार *को ब्रंच* पे बुलाया

Materials/Bibliography

Agnihotri, Ramakant (2007) Hindi: An Essential Grammar. Routledge, UK
Aitchison, Jean (2010) Aitchison's Linguistics. Teach Yourself Books
Fromkin, Victoria, Robert Rodman and Nina Hyams (2007) An Introduction to Language (Eighth Edition) Thomson Wadsworth, USA
Hockett, Charles. (1970) A Course in Modern Linguistics. Oxford & IBH Publishing, New Delhi
Katamba, Frances (1993) Morphology. Macmillan UK
Yule, George (2006) The Study of Language (3rd Edition) Cambridge University Press, India.

****